

जनवरी २०१५ – सम्पूर्णता की ओर - नष्टोमोहा स्मृति-स्वरूप

प्रथम साप्ताहिक पुरुषार्थ : स्व के लिये पदार्थों और धन की कामना/इच्छाओं से मुक्त

स्वमान : मैं संतुष्टमणि आत्मा हूँ ।

क्रम	चेकिंग के बिन्दु	अंक	१	२	३	४	५	६	७
१.	दिनचर्या एक्यूरेट रही ? (अमृतवेला, मुरली, ट्रैफिक कण्ट्रोल, योगयुक्त भोजन, संध्या योग, रात्रि चार्ट...आदि)	२०							
२.	सप्ताह के लिए नियत स्वमान का दिन में १० बार अभ्यास किया ?	२०							
३.	दिन में कम से कम दो बार एकांत में स्वचिंतन करते हुए स्वयं को जो भी प्राप्त है, उसमें संतुष्ट रहते हुए अपनी सभी प्राप्तियों के लिये ईश्वर को धन्यवाद किया ?	२०							
४.	स्व से, सेवा साथियों से, ईश्वरीय परिवार से, ड्रामा के हर सीन से संतुष्ट रहे और सर्व को भी संतुष्ट किया ?	२०							
५.	सारे दिन में योग का चार्ट कितना रहा ? (योग का चार्ट कम से कम ४ घण्टा अवश्य हो) (योग ४ घण्टा हो तो २० मार्क्स, ३ में १५, २ में १० और १ में ५ मार्क्स देंगे)	२०							
	कुल	१००							

द्वितीय साप्ताहिक पुरुषार्थ- नाम, मान, शान, प्रभाव की कामना/इच्छाओं तथा अभावबोध से संपूर्ण मुक्त

स्वमान : मैं राजऋषि, महान तपस्वी आत्मा हूँ

क्रम	चेकिंग के बिन्दु	अंक	८	९	१०	११	१२	१३	१४
१.	दिनचर्या एक्यूरेट रही ? (अमृतवेला, मुरली, ट्रैफिक कण्ट्रोल, योगयुक्त भोजन, संध्या योग, रात्रि चार्ट...आदि)	२०							
२.	सप्ताह के लिए नियत स्वमान का दिन में १० बार अभ्यास किया ?	२०							
३.	सारे दिन ब्रह्मा बाबा की तरह अशरीरी स्थिति और आत्मिक दृष्टि की धुन में कितना रहे ?	२०							
४.	दिन में कम से कम दो बार एकांत में गहराई से स्वचिन्तन किया कि मैं कहाँ तक नाम, मान, शान की कामना से मुक्त हुआ हूँ? कौन सी बातें मेरी तपस्या को भंग करती हैं और कैसे मैं दृढ़तापूर्वक उनसे मुक्त हो सकता हूँ?	२०							
५.	सारे दिन में योग का चार्ट कितना रहा ? (योग का चार्ट कम से कम ५ घण्टा अवश्य हो) (योग ५ घण्टा हो तो २० मार्क्स, ४ में १५, ३ में १० और १ में ५ मार्क्स देंगे)	२०							
	कुल	१००							

जनवरी , २०१५ – सम्पूर्णता की ओर – स्मृति स्वरूप

तृतीय साप्ताहिक पुरुषार्थ- देह व देह के सर्व संबंधों से नष्टोमोहा

स्वमान : मैं नष्टोमोहा स्मृतिस्वरूप आत्मा हूँ।

क्रम	चेकिंग के बिन्दु	अंक	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
१.	दिनचर्या एक्यूरेट रही ? (अमृतवेला, मुरली, ट्रैफिक कण्ट्रोल, योगयुक्त भोजन, संध्या योग, रात्रि चार्ट...आदि)	२०							
२.	मैं एक की लगन में मग्न निरंतर स्मृति स्वरूप आत्मा हूँ - इस स्वमान का दिन मैं १० बार अभ्यास किया ?	२०							
३.	दिन में दो बार एकांत में जाकर गहराई से स्वचिन्तन और चेकिंग किया कि मैं कहाँ तक अपने देह और देह के संबंधियों से नष्टोमोहा बना हूँ? कौन मुझे बाँध रहा है और क्या सचमुच मैं बंधनमुक्त होने का प्रयास कर रहा हूँ?	२०							
४.	बाबा की साकार-अव्यक्त मुरलियों एवं अन्य ईश्वरीय साहित्यों से नष्टोमोहा और स्मृति-स्वरूप अवस्था से जुड़े हुए प्वाइंट्स नोट किए ?	२०							
५.	सारे दिन में योग का चार्ट कितना रहा ? (योग ६ घण्टा हो तो २० मार्क्स, ५ में १५, ४ में १० और २ में ५	२०							
	कुल	१००							

चतुर्थ साप्ताहिक पुरुषार्थ - निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी

स्वमान : मैं ब्रह्मा बाप समान सम्पूर्ण फरिश्ता हूँ।

क्रम	चेकिंग के बिन्दु	अंक	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८
६.	दिनचर्या एक्यूरेट रही ? (अमृतवेला, मुरली, ट्रैफिक कण्ट्रोल, योगयुक्त भोजन, संध्या योग, रात्रि चार्ट...आदि)	२०							
७.	'मैं ब्रह्मा बाप समान सम्पूर्ण फरिश्ता हूँ' - इस स्वमान का दिनभर मैं १० बार अभ्यास किया ? सम्पूर्ण फरिश्ता ब्रह्मा बाबा के साथ सारे विश्व का भ्रमण करते हुए सर्व आत्माओं को सकाश दिया ?	२०							
८.	एकांत में जाकर ब्रह्मा बाबा के अंतिम तीनों वरदानों (निराकारी, निर्विकारी और निरहंकारी) पर गहराई से चिंतन किया ? स्वयं को चेक किया कि कितने इसके स्वरूप बने हैं और कितना बनना बाकि है ? क्या करें बनने के लिये ?	२०							
९.	साकार-अव्यक्त मुरलियाँ, ईश्वरीय साहित्य या अन्य प्रेरक साहित्य का एक अंश अवश्य पढ़ा और निराकारी-निर्विकारी-निरहंकारी अवस्था से जुड़े हुए प्वाइन्ट्स - ससंदर्भ (स्रोत सहित) नोट किये ?	२०							
१०.	सारे दिन में योग का चार्ट कितना रहा ? (योग ८ घण्टा हो तो २० मार्क्स, ६ में १५, ५ में १० और ३ में ५ मार्क्स	२०							
	कुल	१००							

शिवभगवानुवाच : यथार्थ स्मृति का प्रमाण है स्मृति द्वारा समर्थ स्वरूप बनना ।

नाम..... मोबाइल..... ईमेल..... सेवाकेन्द्र.....

नष्टोमोहा कैसे बनें ?

नष्टोमोहा स्थिति सबसे उँची स्थिति है। यह आत्मा की सम्पूर्ण जागृति की स्थिति है। आत्मा अपने आप में सम्पूर्ण रूप से जागृत है। बुद्धि पूरी तरह जागृत होती है। पदार्थ जगत के सर्व प्रकार के सम्मोहन वा आकर्षण समाप्त हो जाते हैं। आत्मा की अन्तर्दृष्टि जागृत हो जाती है। आत्मा की अदृश्य को देखने की शक्ति स्थायी रूप से सक्रिय हो जाती है। आत्मा देह, देह के पदार्थ और देह के सम्बन्ध सभी से उपराम हो जाती है। यह सम्पूर्णता की ही स्थिति होती है।

नष्टोमोहा बनने के लिए विधिवत् क्या गहन पुरुषार्थ करना चाहिए ? मुख्य सात बातों का गहरा अभ्यास वा पुरुषार्थ हो :-

१. आत्मिक दृष्टि का अभ्यास। अदृश्य को देखने का अभ्यास। बुद्धि को बार बार जाग्रत करने का सुझाव दें कि दिव्य अदृश्य शक्ति आत्मा दिखाई दे रही है।
२. अनासक्त वृत्ति बनाना। अपने विचार, भाव, पदार्थ (साधन) घटनाओं आदि सभी में अनासक्त रहना।
३. अनासक्त कर्म करना। कर्मों में आसक्ति ना हो। सहज भाव से कर्म करना। छोटे छोटे कर्म जैसे भोजन करना, पेय पदार्थ पीना, पैदल चलना, देखना, सुनना और नियमित रूप से किये जाने वाले कर्तव्य आदि सभी कर्म होशपूर्वक आत्म-जाग्रति के साथ करना। स्थूल इन्द्रियों की आसक्तियों पर ध्यान दें।
४. निःस्वार्थ भाव से सेवा करना। सेवा भी निःस्वार्थ भावना से करने से कर्म में अनासक्त भावना रह सकती है। सेवा में स्वार्थ है तो कर्म में आसक्ति है और यह भी मोह का रूप है। नष्टोमोहा बनने में बाधा रूप है।
५. वैराग्य भाव में रहना। पदार्थगत और इन्द्रियगत अनावश्यक अभिरूचियों को समाप्त कर दें।
६. अशरीरीपन का अभ्यास। योग अभ्यास में यह लक्ष्य हो कि दृष्टा और दृश्य के कम्बाइन्ड रूप की अनुभूति करनी है। पूरी अव्यक्त अशरीरी स्थिति का अनुभव करना है।
७. शुभ-भावना और शुभकामना। सी द थिंग्स एज दे आर। जो जैसा है उसे वैसा ही सकारात्मक रूप से देखना और स्वीकार कर सम्मान की दृष्टि से देखना।

यथार्थ स्मृति का प्रमाण - समर्थ स्वरूप बन शक्तियों द्वारा सर्व की पालना करो

आज सभी के दिल में स्मृतियाँ आ रही हैं। बापदादा के पास भी अमृतवेले से स्नेह वा याद की वैरायटी मालायें चारों ओर के बच्चों की तरफ से गले में पड़ रही थी। साथ-साथ याद और प्यार के दिल के गीत भी सुन रहे थे। बापदादा दोनों बच्चों

को रिटर्न में भिन्न-भिन्न शक्तियों की, भिन्न-भिन्न वरदानों की मालायें पहना रहे थे। यह स्मृति दिवस साकार दुनिया के मंच पर बच्चों को समर्थी स्वरूप के वरदान द्वारा सन शोज़ फादर का विशेष दिवस है क्योंकि साकार रूप में सेवा के निमित्त बनाने के लिए बच्चों को सेवा के मंच रूपी तख्त पर बिठाने और जिम्मेवारी का ताज पहनाने का दिन है। साकार रूप में सेवा के निमित्त बनने का ताजपोशी वा तिलक का दिवस है। सभी बच्चे बाप के सहयोगी बन निमित्त बने हैं और बनते रहेंगे। बापदादा भी बच्चों को सेवा में उमंग-उत्साह से आगे बढ़ते हुए देख हर्षित हो रहे हैं। हर एक बच्चा नम्बरवार हिम्मत और उमंग से आगे बढ़ रहा है। मैजॉरिटी बच्चे याद और सेवा में लगे रहते हैं। जैसे आज के दिन बच्चे विशेष चारों ओर ब्रह्मा बाप की याद में लवलीन रहते हैं, ऐसे विशेष ब्रह्मा बाप भी बच्चों के लव में लीन रहते हैं। आज ब्रह्मा बाप बच्चों की विशेषताओं को देख रहे थे। जैसे-जैसे हर बच्चे की विशेषता सामने आ रही थी तो ब्रह्मा बाप के मुख से यही बोल निकल रहे थे वाह बच्चे, वाह! शाबास बच्चे, शाबास! और क्या हुआ? जैसे ही ब्रह्मा बाप वाह बच्चे, वाह! शाबास बच्चे कह रहे थे ऐसे ही सभी बच्चों के नयनों से प्रेम की गंगा-जमुना

निकल रही थी। हर एक बच्चा प्रेम की नदी में लवलीन था। यह था वतन का दृश्य। साकार दुनिया में भी हर एक स्थान का अपना-अपना याद और स्नेह का दृश्य बापदादा ने देखा। अब आगे क्या करना है? स्मृति तो रहती है लेकिन यथार्थ स्मृति का प्रमाण है स्मृति द्वारा समर्थ स्वरूप बनना। स्मृति अति श्रेष्ठ है, जब ब्राह्मण बनें तो बापदादा द्वारा जो जन्म सिद्ध अधिकार प्राप्त किया, वह सेकण्ड की स्मृति

द्वारा ही प्राप्त किया। दिल ने जाना, दिल में, मन में, बुद्धि में स्मृति आई “मैं बाबा का और बाबा मेरा”, इस स्मृति द्वारा ही जन्म-सिद्ध अधिकार के अधिकारी बनें। यह स्मृति सर्व शक्तियों की चाबी बनी। यह स्मृति गोल्डन की (उदत्त ख७) है। मैं बाप की अर्थात् मैं आत्मा हूँ, जब निश्चय हुआ मैं आत्मा बाप की बच्ची हूँ, तो निश्चय में कितना टाइम लगा? कोर्स करने में टाइम लगा लेकिन जब निश्चय हुआ तो कितना टाइम लगा? सेकण्ड का सौदा हुआ ना! सेकण्ड में वर्षों के अधिकारी बन गये। अधिकारी तो सब बन गये हैं, सभी अधिकारी बने हैं ना या बन रहे हैं? अधिकारी बन गये हैं? यह पक्का है? अच्छा।

डबल फारेनर्स वर्षों के अधिकारी बन गये हैं? पाण्डव अधिकारी बन गये हैं? पक्का? पक्का? पक्का? बहुत अच्छा, मुबारक हो अधिकारियों को। अधिकार में विशेष बाप द्वारा सर्व शक्तियाँ मिली हैं? एक हाथ उठाओ मिली हैं? सर्व शक्तियाँ मिली हैं ना! या किसको ८ मिली हैं, किसको ६ मिली हैं? अपने को कहलाते भी हैं - मास्टर सर्वशक्तिवान। शक्तिवान नहीं कहते हैं, सर्वशक्तिवान कहते हो। यह आगे बैठने वाले सर्वशक्तिवान हैं? बापदादा ‘सर्व’ शब्द का पूछ रहे हैं? सभी सर्वशक्तिवान हो या कोई-कोई शक्तिवान भी है? है कोई? जो कहे मैं सर्वशक्तिवान तो नहीं हूँ लेकिन शक्तिवान हूँ, ऐसा कोई है? नहीं है? कोई हाथ नहीं उठा रहा है। सर्व मास्टर सर्वशक्तिवान हैं, अच्छा। तो हे मास्टर सर्वशक्तिवान, बापदादा पूछते हैं कि हर प्रकृति के, माया के, स्वभाव-संस्कार के, वायुमण्डल के परिस्थितियों में

सर्वशक्तिवान हो ना? यह प्रकृति, माया, संस्कार, वायुमण्डल या संगदोष इन पाँचों को अपनी शक्ति के आधार से अधीन बनाया है? यह ५ शीश वाला साँप है, इस साँप पर, ५ शीश पर अधिकारी बन डाँस करते हो? करते हो या कोई एक शीश निकालकर आपके ऊपर डाँस करता है? साँप भी डाँस तो करता है ना बहुत अच्छी। तो कोई भी एक शीश आपको डाँस दिखाने तो नहीं आते? कभी उसका खेल देखना अच्छा तो नहीं लगता है? खेल देखने लग जाओ। ५ ही साँपों को गले की माला बना दी है? शोश शय्या बना दी है, डाँस का मंच बना दिया है? आपके अन्तिम महादेव, तपस्वी देव, अशरीरी स्थिति वाली देव आत्मा, फ़रिश्ता आत्मा इस यादगार में यह सब साँप गले की माला दिखाई है। जब यह माला पहनते तब बाप की माला में नम्बर अच्छे में नजदीक मणके बनते हैं। विजय माला के समीप के मणके बनते हैं। बापदादा ने पहले भी सुनाया है कि वर्तमान समय, समय के अनुसार विशेष सहनशक्ति और समस्या या परिस्थिति को सामना करने की शक्ति कर्म में आवश्यक है। सिर्फ मन और वाणी तक नहीं, कर्म तक आवश्यक है। बापदादा ने रिजल्ट में देखा है कि शक्तियाँ हैं, शक्तियाँ नहीं हैं - यह नहीं है। हैं, लेकिन फर्क क्या पड़ जाता है? समय पर जो शक्ति जिस विधि से कार्य में लगानी चाहिए, वह समय पर और विधि पूर्वक यूज करने में, कार्य में लगाने में अन्तर पड़ जाता है। स्मृति है लेकिन स्मृति को समर्थ स्वरूप में नहीं लाते। स्मृति ज़्यादा है, समर्थी कभी कम, कभी ठीक हो जाती। स्मृति ने वर्षों के अधिकारी तो बना दिया है लेकिन हर स्मृति की समर्थी विजयी बनाए विजय माला का समीप मणका बनाती है। समर्थियों को स्वरूप में लाओ। मन में है, बुद्धि में है लेकिन आपके स्वरूप में हर कार्य में, हर समर्थी प्रत्यक्ष रूप में आवे। तो स्मृति दिवस तो बहुत अच्छा मनाया। अब समर्थियों को स्वरूप में लाओ। अगर किसको भी देखते हो तो आपके नयन से समर्थ स्वरूप का अनुभव हो। हर बोल से दूसरा भी समर्थ बन जाए। समर्थी का अनुभव करे। साधारण बोल नहीं। हर बोल में जो समर्थी का वरदान मिला है वह अनुभव कराओ। मन-बुद्धि द्वारा श्रेष्ठ संकल्प और यथार्थ निर्णय शक्ति का वायुमण्डल स्वरूप में लाओ। साधारण चलन में भी फ़रिश्ते पन के समर्थी का स्वरूप दिखाई दे। डबल लाइट का स्वयं को भी और दूसरों को भी अनुभव हो। ऐसे है? तो चलते फिरते समर्थ स्वरूप बनो और दूसरों को समर्थी दिलाओ। बापदादा ने आज ब्रह्मा बाप को साथ में, (बापदादा दोनों साथ में) एक सैर कराया। क्या सैर कराया? ब्रह्मा बाप के अव्यक्त होने के बाद जो भी देश-विदेश में अव्यक्त जन्म लेने वाले हैं, वह सभी ब्राह्मण दिखाये। तो कितने होंगे वह? साकार रूप से अव्यक्त रूप की रचना बहुत ज़्यादा थी। हर स्थान के अव्यक्त रचना वाली आत्माओं को वतन में इमर्ज किया। सुना। उसमें आप लोग भी हैं ना! और हर एक को बापदादा ने

बहुत स्नेह की, समीप की दृष्टि दी। और अव्यक्त रचना को एक विशेष गिफ्ट भी दी। अभी यहाँ जो बैठे हो वह साकार ब्रह्मा के बाद जो ब्राह्मण आत्मा रचना में आये हो, वह हाथ उठाओ। मैजारिटी हैं, अच्छा नीचे करो। अच्छा जो साकार रूप की रचना है, वह हाथ उठाओ। बहुत थोड़े हैं। आज की सभा में बहुत थोड़े हैं। तो बापदादा ने हर एक बच्चे को इमर्ज किया, क्योंकि संख्या बहुत थी। यहाँ तो बैठ भी नहीं सकेंगे, वतन में तो सब आ सकते हैं। वहाँ जितना बड़ा स्थान चाहिए उतना स्थान है। तो बापदादा ने सभी को वतन में इमर्ज किया अर्थात् निमन्त्रण देके बुलाया। सभी बड़े खुश हो रहे थे और बापदादा उनसे ज्यादा खुश हो रहे थे। बापदादा ने उन रत्नों को सौगात दी, बहुत सुन्दर बेदाग हीरे का बहुत चमकता हुआ कमल पुष्प था, जिसमें एक-एक कमल के पत्ते में भिन्न-भिन्न शक्तियाँ थीं, जो भिन्न-भिन्न रंग में चमक रही थी। वह बेदाग हीरे का कमल पुष्प आप इमर्ज करो कितना शोभनिक होगा। इमर्ज हुआ? इमर्ज किया? डबल फारेनर्स ने इमर्ज किया? टीचर्स ने इमर्ज किया? पाण्डवों ने इमर्ज किया? और मीठी-मीठी माताओं ने इमर्ज किया? मातायें इस विश्व विद्यालय की विशेषता है। सभी को आश्चर्य किस बात का लगता है? कि इतनी मातायें और शक्तियाँ बन गईं! इतनी मातायें पवित्रता का व्रत धारण कर देवियों के रूप में

परिवर्तन हो गईं। मैजारिटी मातायें दिखाई देती हैं। तो बापदादा ने आज अव्यक्त रचना को बहुत-बहुत प्यार दिया और वतन में बगीचा भी इमर्ज किया, पहाड़ भी इमर्ज किया और साथ में सागर भी इमर्ज किया। और सभी को खूब घुमाया। फ्रीडम थी घूमने की। खेल नहीं कराया, बॉल और बैट-बॉल का खेल नहीं कराया। कोई सागर में लहरों में लहरा रहे थे, कोई पहाड़ी पर बैठे हुए थे, कोई बगीचे में घूम रहे थे, तो आज वतन में अव्यक्त रचना की महफिल थी। बापदादा ने सभी को यही वरदान दिया सदा सर्व शक्तियों में जीते रहो, उड़ते रहो।

तो बापदादा का आज के स्मृति दिवस का विशेष महामन्त्र है “स्मृति स्वरूप बन समर्थियों को स्वरूप में लाओ।” खजाने को गुप्त नहीं रखो, हर कर्म द्वारा बाहर में प्रत्यक्ष करो। जो भी आत्मा चाहे दृष्टि के, चाहे मुख के बोल में, चाहे कर्म में साथ में सम्पर्क में आये, उसको समर्थ बनने का सहयोग दो, समर्थ स्वरूप का स्नेह दो। बापदादा ने यह भी देखा कि जो नये नये बच्चे आते हैं, उन्हीं में कई आत्मायें ऐसी भी हैं जिन्हें को बापदादा के सहयोग के साथ-साथ आप ब्राह्मण आत्माओं के द्वारा हिम्मत, उमंग, उत्साह, समाधान मिलने की आवश्यकता है। छोटे-छोटे हैं ना! फिर भी हैं छोटे लेकिन हिम्मत रख ब्राह्मण बने तो हैं ना! तो छोटों को शक्तियों द्वारा पालना की आवश्यकता है। और पालना नहीं, शक्ति देने के पालना की आवश्यकता है। तो जल्दी से स्थापना की ब्राह्मण आत्मायें तैयार हो जाएँ क्योंकि कम से कम ९ लाख तो चाहिए ना! तो शक्तियों का सहयोग दो, शक्तियों से पालना दो, शक्तियाँ बढ़ाओ। ज्यादा डिसकस करने की शिक्षायें नहीं दो। शक्ति दो। उनकी कमजोरी नहीं देखो लेकिन उसमें विशेषता वा जो शक्ति की कमी हो वह भरते जाओ। आजकल

जो निमित्त हैं उन्हीं को इस पालना के निमित्त बनने की आवश्यकता है। जिज्ञासु बढ़ायें, सेवाकेन्द्र बढ़ायें यह तो कामन है, लेकिन हर एक आत्मा को बाप की मदद से शक्तिशाली बनायें, अभी इसकी आवश्यकता है। सेवा तो सब कर रहे हो और करने के बिना रह भी नहीं सकते। लेकिन सेवा में शक्ति स्वरूप के वायब्रेशन आत्माओं को अनुभव हो, शक्तिशाली सेवा हो। साधारण सेवा तो आजकल की दुनिया में बहुत करते हैं लेकिन आपकी विशेषता है – ‘शक्तिशाली सेवा’। ब्राह्मण आत्माओं को भी शक्ति की पालना आवश्यक है। अच्छा।

बापदादा के सामने देश-विदेश सब तरफ के बच्चे दूर होते हुए भी सामने हैं। बापदादा जानते हैं, सभी एक ही शब्द बोलते हैं - हमारी भी याद देना, हमारी भी याद देना। बापदादा के पास सभी की याद पहुँचती ही है। चाहे पत्र द्वारा, चाहे मुख द्वारा, चाहे कार्ड द्वारा, चाहे आजकल ई-मेल द्वारा भेजते हैं। साइंस के साधन बहुत हो गये हैं। बापदादा के पास साधनों से भी याद पहुँचती है और दिल के आवाज़ से भी याद पहुँचती है। सबसे जल्दी दिल का आवाज़ पहुँचता है। तो आज के दिन जिन्होंने भी दिल से, भिन्न-भिन्न साधनों से यादप्यार भेजा है उन सभी को बापदादा यादप्यार दे रहे हैं। बच्चों ने एक बार याद दी, बाप पद्मगुणा रिटर्न में यादप्यार दे रहे हैं। अच्छा।

चारों ओर के दिल के समीप समर्थ आत्माओं को, सदा समय पर हर शक्ति को स्वरूप द्वारा प्रत्यक्ष करने वाले श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा शक्तियों द्वारा आत्माओं की पालना के निमित्त बनने वाले बाप के सहयोगी आत्माओं को, सदा हर एक में हिम्मत, उमंग और उत्साह देने वाले उड़ती कला वाली आत्माओं को, सदा समस्या को समाधान में परिवर्तन करने वाले विश्व-परिवर्तक आत्माओं को स्मृति स्वरूप सो समर्थ स्वरूप आत्माओं को, बापदादा का पदमगुणा यादप्यार और नमस्ते।

सेवा का टर्न छतीसगढ़-इन्दौर ज़ोन का है – सभी ने बहुत दिल से सेवा की, सबको सन्तुष्ट किया और स्वयं भी सन्तुष्ट रहे इसकी मुबारक हो। नई स्टेट बनी है इसलिए नई स्टेट वालों को बापदादा सदा याद और सेवा में आगे उड़ने की मुबारक दे रहे हैं। अच्छा किया।

कन्याओं से – आगे कुमारियाँ हैं, पीछे मातायें हैं। बहुत अच्छा। जैसे अभी खड़ी हो गई ना ऐसे याद और सेवा में सदा खड़े रहना। हॉस्टल की कुमारियाँ तो अच्छी पालना में पल रही हैं। ऐसी पालना जो वायुमण्डल के प्रभाव से बचे हुए हो।

तो सदा आगे बढ़ रही हो और बढ़ते ही रहेंगे। अच्छा मुबारक हो। जो नई स्टेट बनी है ना छतीसगढ़, (छतीसगढ़ में १६ ज़िले हैं, राजधानी रायपुर है) उसकी राजधानी को मुबारक हो। अच्छा सेवा का फल भी मिला, बल भी मिला। फल है खुशी और बल है सदा ऐसे निर्विघ्न रहने का। तो यह सदा ही साथ रखना। अच्छा। टीचर्स को भी बहुत-बहुत मुबारक है। अभी जो बापदादा ने कहा शक्ति देने की पालना बढ़ाते रहना। मधुबन निवासी भी आये हैं। अच्छा - आज खास यह संगम भवन है ना, संगम भवन वाले आये हैं, उन्हीं की भी सेवा कम नहीं है। आज खास उन्हीं की याद बापदादा को मिली थी। रिसेव करने की सेवा भी कम नहीं है। वैसे तो जो भी शान्तिवन के सेवाधारी हैं उन सबकी सेवा एक दो से आगे है, अच्छी है। जागना भी पड़ता है, चलना भी पड़ता है, दौड़ना भी पड़ता है। सन्तुष्ट करना भी पड़ता है। मुबारक हो। पाण्डव भवन वाले, मधुबन की चार भुजाओं वाले सभी को मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो। डबल फारेनर्स देख रहे हैं, हमको बापदादा ने नहीं कहा। डबल फारेनर्स से सभी बापदादा सहित दादियों का, सभी ब्राह्मणों का डबल ट्रिपल प्यार है, क्यों? भापदादा सदैव विशेषता सुनाते हैं कि कई प्रकार के कल्चर की दीवारों को तोड़कर ब्राह्मण जीवन में पहुँच गये हैं। ब्राह्मण कल्चर वाले बन गये हैं और लगता ही नहीं है कि यह कोई दूसरे देश के हैं। अपने भारत के हैं और सदा रहेंगे। इसीलिए डबल विदेशियों को भी बहुत-बहुत अरब-खरब बार मुबारक हो। बहुत अच्छा। देखो हिम्मत करके पहुँच तो गये हैं ना! चाहे टिकेट मिले न मिले लेकिन लेकर पहुँच तो गये हैं। हिम्मत अच्छी है। अच्छा। अभी क्या करना है!

दादी जी से – साधनों को अपना पड़ता है। वृद्धि बहुत फास्ट हो रही है ना! अच्छा है। वृद्धि भी हो रही है और सभी को सन्तुष्टता भी मिल रही है। अच्छा पार्ट बजा रही हो। (बाबा करा रहा है) फिर भी निमित्त तो हैं। बापदादा रोज़ अमृतवेले

वरदान के साथ-साथ मसाज़ भी करते हैं। बापदादा देखते हैं तो निमित्त बनने वालों को मेहनत भी करनी पड़ती है। (बाबा, कोई भी मेहनत नहीं है) चलो खेल ही कहो, खेल करते हैं, मेहनत नहीं करते। इस समय जनक बेटी भी याद कर रही है। वह सोच रही है मैं स्टेज पर हूँ। बापदादा भी मुबारक दे रहे हैं। अच्छा है जो पार्ट जिसको मिला है, वह विधिपूर्वक कर रहे हैं। हर एक पाण्डव भी अपना-अपना पार्ट बजा रहे हैं। नारायण दादा और उनके बेटे से – ठीक है ना। दोनों ही ठीक हो? इसको बापदादा ने फ्री रखा है, जब मन करे जैसे मन करे, मर्यादापूर्वक वैसे करो। ब्राह्मण जीवन की, लौकिक परिवार की दोनों की मर्यादा जानते हैं। दोनों ही जानते हो ना कि एक जानते हो? दोनों ही जानते हो। तो दोनों को निभाना है। अच्छा है। बस अभी थोड़ा सा मधुबन से कनेक्शन बढ़ाओ। लेन-देन करो। मन में बातें नहीं करो, मुख से भी करो। यह बीज विनाश तो होना नहीं है। अच्छा है फिर भी जीते हैं। अच्छा। सिकीलधा तो है! बहुत अच्छा। दोनों ही ठीक हैं। आपका घर है जब चाहो तब आओ। ठीक है ना!

जगदीश भाई से – जगदम्बा माँ का स्लोगन याद है ना - हुक्मी हुक्म चलाए रहा। तो आपका भी अभी यही अनुभव है ना। करावनहार कराए रहा है। चलाने वाला चला रहा है, बाकी अच्छा है यह सभी आदि रत्नों ने, आप हो सेवा के आदि रत्न, यह (दादियाँ) हैं स्थापना के आदि रत्न। यह पाण्डव भी सेवा के आदि रत्न हैं। (आज बाबा के कमरे में गया तो वह यादें आ गईं, यहाँ होते भी नहीं था, आँसू भर आये) इस याद से और ही प्रत्यक्ष रूप में एक तो प्यार बढ़ता है, दिल का प्यार बाहर निकलता है और दूसरा याद में बाप के समानता की हिम्मत भी आती है। अच्छा हुआ। लेकिन बापदादा कह रहे थे कि जो भी सेवा में आदि रत्न हैं वा स्थापना के आदि रत्न हैं दोनों ने सेवा बहुत अच्छी की है, निमित्त बने हैं। सहन भा किया और प्यार भी मिला। अच्छा किया क्योंकि उस समय हिम्मत रखने वाले थोड़े थे लेकिन हिम्मत रखके सहयोगी बनें, वह सहयोग की जो मार्क्स हैं वह जमा हैं। जमा खाता अच्छा है। एक का पद्मगुणा जमा होता है ना। तो जिन्होंने भी जो कुछ

दिल से और शक्तिशाली होके किया है, उन्हीं का एक का लाख गुणा नहीं लेकिन पद्मगुणा जमा है। आप सबका भी जमा है, इन्हीं का भी जमा है। रतन मोहनी दादी से – अच्छा सहयोगी हो। नीचे ऊपर होना तो पड़ता है लेकिन सहयोगी तो बनना ही है। बापदादा की भुजायें हो ना तो भुजाओं का काम क्या है? सहयोग देना। अच्छा दे रही हो। अच्छा सहयोगी हैं ना। अच्छा - ओम् शान्ति।

आत्मा के सात मौलिक गुण

आत्मा में सात मौलिक गुण हैं – ज्ञान, पवित्रता, शान्ति, प्रेम, सुख, आनन्द व शक्ति। इन गुणों की अभिव्यक्ति सतयुग में शत-प्रतिशत होती है तो कलियुग में ये प्रायः लोप हो जाते हैं। किसी भी वस्तु के अस्तित्व का पता तभी चलता है जब मन के चैतन्य प्रकाश से वह प्रकाशित हो। यदि मन के संज्ञान में यह बात ही नहीं है कि कार में पीछे रखी स्टेपनी (टायर) में पंचर है, तो कोई उसे ठीक कराने की नहीं सोचेगा। उसी प्रकार यदि यह पता ही नहीं हो कि आत्मा में कौन-कौन से गुण हैं, तो कोई उनके विकास के बारे में सोचेगा ही नहीं। इन गुणों का ज्ञान होना, इनकी अभिव्यक्ति में सहायक होता है। जब इन गुणों के स्वरूप पर कोई विचार करता है, तो उसे यह भी पता चलता है कि उसमें ये गुण कहाँ तक क्रियाशील हैं और कैसे इन्हें कर्म में धारण किया जाये। जैसे यदि कोई अक्सर अशांत रहता है और उसे यह पता चल जाये अथवा समझ में आ जाये कि शांति आत्मा का स्वधर्म है तो वह अपनी अशान्ति के लिये दूसरों को दोष देना कम कर देगा। इसके विपरीत, विकारों के स्वरूप का ज्ञान होना, इन्हें त्यागने में सहायक होता है। जैसे कि यदि किसी क्रोधी को यह ज्ञान कराया जाये कि तुम्हारा यह क्रोध, पाँच विकारों में दूसरा स्थान रखता है और इससे तुम्हारा स्वास्थ्य तो खराब होता ही है, साथ में दूसरों से संबंध भी खराब होते हैं और यह बात उसे समझ में आ जाये, तो वह 'मेरा स्वभाव ही ऐसा है', 'मेरी आदत ही ऐसी है', ऐसे कहना बंद कर देगा। वह क्रोध को त्यागने का प्रयास करेगा। आइये, क्रमवार इन सातों गुणों का चिन्तन करें –

(१) ज्ञान – ज्ञान के दो रूप हैं – विज्ञान और आध्यात्मिक ज्ञान। इन दोनों की ही उत्पत्ति शांति की शक्ति से होती है। मनुष्य जब एकांत में मन की एकाग्रता को स्थूल पदार्थों पर केंद्रित करते हैं तो विज्ञान के रहस्य खुलते हैं और नये-नये आविष्कार सामने आते हैं। परंतु जब मन को एकांत में अन्तर्जगत व सूक्ष्म शक्तियों की तरफ मोड़ा जाता है, तो आध्यात्मिक चेतना व आत्मिक अस्तित्व का ज्ञान होता है। विज्ञान चूँकि मनुष्य को देह व देह के पदार्थों व भोग-विलास के साधनों की तरफ ले जाता है और आत्मा की निज सत्ता से दूर करता है, अतः इसे 'रावण का वैभव' कहा जा सकता है। आध्यात्मिक ज्ञान चूँकि मनुष्य को उसके आदि मौलिक स्वरूप का बोध कराता है और परमात्मा के करीब लाता है अतः इसे 'राम या भगवान का सौरभ (सुगंध)' कहा जा सकता है। फिर जब कलियुग के अंत में, संगमयुग पर स्वयं परमात्मा शिव, ब्रह्मा के तन का आधार लेकर भाग्यशाली मनुष्यों की आत्माओं को 'अमृत-तुल्य-सत्य-ज्ञान' से सुगंधमय बनाते हैं, तो उनमें आदिमौलिक गुण इमर्ज हो जाते हैं। ये गुण ही वर्तमान में चल रहे आध्यात्मिक पुरुषार्थ को आधार प्रदान कर आगामी सतयुगी सृष्टि की प्रालम्ब बनाते हैं। 'ज्ञान' रूपी मौलिक गुण आत्मा के यथार्थ स्वरूप का एवं परमपिता शिव के स्वरूप का बोध कराता है, सृष्टि-चक्र व आत्मा के ८४ जन्मों का ज्ञान कराता है, विकारों से मुक्त होने व दिव्य गुणों से सुसज्जित होने की विधि का ज्ञान कराता है, कलियुग में रहते अतींद्रिय सुख में रहने का ज्ञान कराता है।

(२) पवित्रता – आत्मा का दूसरा मौलिक गुण है पवित्रता। इसे दूसरे शब्दों में आत्मिक स्वच्छता भी कहा जा सकता है। आदिकाल सतयुग में आत्मा देहभान, अहंकार, परकाया आकर्षण आदि से मुक्त थी। स्वच्छता से संकल्पों में एकाग्रता व दृष्टि में शक्ति आती है। सात्विक, एकाग्र संकल्प व दृष्टि की 'शीतल-शक्ति' का योग मनुष्यों को बिना विकार में गये संतान प्राप्त करा देता था अर्थात् 'योग बल' से संतान प्राप्त होती थी, न कि 'भोग बल' से। परंतु समय के साथ 'पवित्रता' का गुण अपनी शक्ति खोता गया और द्वापर युग से संतान की पैदाइश, भोग-बल से होने लगी। आत्मा के मौलिक गुणों का अस्तित्व कभी समाप्त नहीं होता बल्कि उनकी शक्ति जन्म दर जन्म क्षीण होते-होते कलियुग के अंत में बिल्कुल निष्प्रभावी हो जाती है।

(३) शान्ति – शांति का गुण शरीर की इंद्रियों को अनुशासन में रख कर आत्मा को 'स्व-दर्शन' में रहने का मौका देता रहता है। यह गुण ना तो भूतकाल की अनुपयोगी बातों में संकल्प को विचरण करने देता है और न ही भविष्य के प्रति डर, भय, चिन्ता करने की इजाज़त ही देता है। यह गुण तो आत्मा को साक्षी भाव से द्रष्टा बन, वर्तमान में रहने को प्रेरित करता है।

मनुष्य अशांति में आता ही तब है जब वह वर्तमान में नहीं रहता। शान्ति के गुण वाला मनुष्य किसी भी अशान्त मनुष्य को प्रेम, दया, सहानुभूति से शांत कर सकता है क्योंकि यह गुण उस अशांत मनुष्य को वर्तमान में ले आता है और वर्तमान में आकर ही मनुष्य शांति प्राप्त कर सकता है।

(४) प्रेम – आत्मा शरीर धारण कर अन्य देहधारियों से संबंध-संपर्क में आती है अतः संबंधों में मिठास हेतु प्रेम का गुण आवश्यक है। फिर जब संबंधी ही उसे दुख देने लगते हैं तो उसका प्रेम देहधारियों से निकल कर प्रेम के सागर परमात्मा से जुड़ जाता है। मनुष्य स्वभाव से या आत्मिक रूप में है ही शांत स्वरूप अतः उन शांति के क्षणों में प्रेम-भाव का होना आवश्यक है अन्यथा दुःख, घृणा, ईर्ष्या जैसी मनःस्थिति से शांति में टिका नहीं जा सकता है। इस प्रकार प्रेम का गुण शांति के गुण का सहयोगी है।

(५) सुख – आत्मा का पाँचवां मौलिक गुण है सुख। आज दुःख का साम्राज्य सर्वत्र फैला पड़ा है। दुःख बाँटने से कम हो जाता है और सुख बाँटने से दुगुना हो जाता है परंतु आज दुःख में साथ खड़े होने को कोई तैयार नहीं है और सुख में हिस्सेदारी करने को अनेक हैं। मोटे तौर पर इस समय विश्व में ८० प्रतिशत मनुष्य अभावग्रस्त व दुखी हैं। परंतु वे दुःख में जीने के इतने आदी हो गये हैं कि सुखमय जीवन प्राप्त करने हेतु कोई सार्थक प्रयास ही नहीं करते। वे आहार, निद्रा, भय व मैथुन, जो पशुओं के धर्म बतलाये गये हैं, उन्हीं में उलझ कर इस दुर्लभ जीवन को नष्ट कर देते हैं। अठारह प्रतिशत मनुष्य कोई आवश्यक कमी न होते हुए भी सुख-दुःख के झूले में झूलते रहते हैं। वे स्थायी सुख चाहते तो हैं, परंतु उसे या तो धार्मिक मार्ग द्वारा या फिर नैतिक-अनैतिक किसी भी कर्म से प्राप्त करने को प्रयासरत रहते हैं। बचे हुए २ प्रतिशत मनुष्य भौतिक सुख की अति में रहते हुए व खुद को सुखी मानते हुए भी मानसिक तौर पर दुखी, अशांत हैं। उन्हें यह भी नहीं पता है कि वे वास्तव में एक भुलावे का अस्वाभाविक जीवन जी रहे हैं। अगर इन सभी प्रकार के मनुष्यों को आत्मा के सुख के गुण की समझ आ जाये और आने वाले सुखधाम, सतयुग या भविष्य का दिग्दर्शन हो जाये, तो निश्चित तौर पर वे आत्मिक सुख व अन्य गुणों की धारणा के प्रति प्रयासरत हो जायें। देखा जाये तो काया को सुख, आत्मा की शांति से प्राप्त होता है; मन की शांति श्रेष्ठ कर्मों से संभव है; श्रेष्ठ कर्म, श्रेष्ठ संस्कारों से होते हैं; श्रेष्ठ संस्कार, श्रेष्ठ स्मृति से बनते हैं और परमपिता निराकार शिव व उनकी श्रीमत् की स्मृति ही सर्वश्रेष्ठ संस्कारों की आधारशिला है। परंतु जब तक उस परमपिता शिव के स्वरूप का ज्ञान न हो, तब तक उसकी स्मृति आ नहीं सकती। इस प्रकार सुख की जननी 'ज्ञान' है।

(६) आनन्द – आत्मा का छठा मौलिक गुण है आनन्द। कह तो यह दिया जाता है कि आनन्द सर्वोच्च स्थिति है और उसका उल्टा कुछ होता नहीं परंतु आनन्द का उल्टा 'व्याकुलता' है। आनन्द को हर्ष, सुख, प्रसन्नता आदि समझ लिया जाता है परंतु आनन्द इनसे भिन्न है। यह तो आत्मा के ऊपर, पूर्व में किये गये सत्कर्मों का प्रभाव है जो अपनी छाप चाल-चलन और चेहरे पर भी छोड़ता है।

(७) शक्ति – आत्मा का सातवां मौलिक गुण 'आत्मिक शक्ति' है। यह शारीरिक शक्ति नहीं है परंतु यह शारीरिक शक्ति को प्रभावित करता है। एक ठिगना-सा दुबला-पतला व्यक्ति भी कई बार अच्छे-खासे बलिष्ठ व्यक्ति को, इच्छा शक्ति द्वारा शारीरिक शक्ति पैदा कर पछाड़ देता है। मायावी सूक्ष्म शक्तियों (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष, आलस्य, अलबेलापन आदि) को पछाड़ने के लिए आत्मा को अष्ट शक्तियों की आवश्यकता होती है। आत्मा की उपमा एक ऐसी बैटरी से की जाती है जो परमात्मा रूपी पावर जनरेटर से शक्ति ले कर अपनी शाश्वत, सनातन, नित्यस्वरूप, अक्षय स्थिति को बनाये रखती है। वैसे तो सारी आत्मायें ही अजर, अमर, अविनाशी हैं परंतु देखना यह है कि 'क्या मैं आत्मा, निराकारी लोक में लंबे समय तक निद्रा जैसी अवस्था में पड़ी रहने वाली हूँ?' या 'मैं आत्मा सारे कल्प में भिन्न-भिन्न पार्ट बजा कर अंत में परमपिता शिव से मिलन मनाने वाली हूँ?'

शरीर तो हर आत्मा को देर-सवेर मिल ही जाता है परंतु महत्वपूर्ण बात यह है कि शरीरधारी जीवन सात मौलिक गुणों से युक्त है या विकारों से युक्त है। आत्मा के मौलिक गुण, आत्मा के अंदर से उभरते हैं जबकि पाँच मुख्य विकार आत्मा में बाहर से प्रवेश पाते हैं। जहाँ विकार हैं वहाँ मौलिक गुण उभर नहीं सकते। हाँ, यह संभव है कि विकार छूटते जायें और मौलिक गुण आत्मा में उभरते जायें। इसकी विधि 'सहज राजयोग' की पढ़ाई द्वारा प्राप्त होती है। ये सात गुण फिर अनेक दिव्य गुणों की प्रवेशता का द्वार खोलते हैं। आइये, गुणवान बनें।